Sanvahak, Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-21-23

Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec,) 2025
Page No.- 21-23
©2025 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com
Author's :

खुशबू चौहान
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

Corresponding Author :

खुशबू चौहान
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

फणीश्वर नाथ रेणु के कथा साहित्य में स्त्री जीवन

शोध सार : फणीश्वर नाथ रेणु अपने साहित्य में स्त्री जीवन के दर्द को दर्शाते हैं, समाज में स्त्रियों के नियम और परंपराएं जटिल थीं। स्वतंत्रता के बाद सामाजिक संरचना में अनेक परिवर्तन आते जा रहे थे परंतु यह परिवर्तन स्त्रियों की परिस्थितियों को विशेष प्रभावित नहीं कर पा रहे थे, भारत का ग्रामीण समाज आज भी अत्यंत पिछड़ा हुआ था और उस ग्रामीण समाज की स्त्री अभी भी इन रीति रिवाजों तथा रुढ़ियों की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। रेणु ने अपने साहित्य में विभिन्न प्रकार के मुद्दों को लेकर स्त्री जीवन को चित्रित किया है, उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री समस्या केंद्र बनी रही है।

रेणु के स्त्री पात्र केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं थे बल्कि आत्मनिर्भर, संघर्षशील और जुझारु भी थे, जिसका चित्रण रेणु जी ने बड़ी सूक्ष्म ढंग से किया है। 'मैला आंचल' की फुलिया, 'परती परिकथा' की कमला, 'पंचलाइट' की मुनरी जैसी नायिकाओं ने अपने आत्म सम्मान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया है। यह आम स्त्री का संघर्ष का है जो हमारे आस-पास के बीच की ही है वह प्रेम, त्याग सामाजिक बंधनों और न्याय के बीच अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती रहीं हैं। रेणु ने अपने साहित्य में स्त्रियों की पीड़ा, शोषण, प्रेम, विद्रोह और संघर्ष को अत्यंत संवेदनशील और प्रामाणिकता के साथ चित्रित किया है, उनके पात्र केवल पुरुष प्रधान समाज की छाया ही नहीं बल्कि अपने विचारों और निर्णय में कुशल हैं, उनके साहित्य में प्रस्तुत स्त्री जीवन का विश्लेषण किया गया है। इसमें ग्रामीण महिलाओं की स्थिति उनकी चुनौतियां और उनके आत्मनिर्भर बनाने की प्रक्रिया को समझाने का प्रयत्न किया गया है। फणीश्वर नाथ रेणु की स्त्री संवेदना उनके साहित्य को न केवल उचित बनाती है बल्कि सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं को भी प्रकट करती है, रेणु के साहित्य में स्त्री जीवन का विचार हमें भारतीय समाज की जटिलताओं को समझने में सहायक होता है।

बीज शब्द : स्त्री जीवन, ग्रामीण समाज, आत्मनिर्भरता, सामाजिक परिवर्तन, शोषण और पीड़ा, संवेदना, यथार्थवाद, संघर्षशील, पारंपरिक भूमिका, नारी संवेदना।

भूमिका : फणीश्वर नाथ रेणु हिंदी साहित्य के प्रमुख कथाकारों में से एक हैं जिनकी रचनाओं में ग्रामीण समाज का सच्चा चित्रण प्रस्तुत होता है। रेणु के साहित्य में स्त्री जीवन का अपना ही विशेष स्थान पाया जाता है। उनकी कहानी तथा उपन्यासों में स्त्रियों की सामाजिक आर्थिक और मानसिक स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया गया है।

शोध विस्तार : फणीश्वर नाथ रेणु हिंदी साहित्य के प्रमुख कथाकारों में से एक हैं ,जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज, विशेष रूप से ग्रामीण जीवन की सजीव झलक प्रस्तुत की। "उनके साहित्य में स्त्री जीवन का चित्रण एक विशेष स्थान रखता है। उन्होंने स्त्रियों की सामाजिक स्थिति ,संघर्ष, प्रेम, पीड़ा और उनकी स्वतंत्रता की आकांक्षा को संवेदनशीलता के साथ व्यक्त किया है।"[1] यह शोध पत्र उनके कथा साहित्य में स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। स्त्री जीवन की संवेदनाओं, पीड़ाओं एवं संघर्षों को अपनी कहानियों में जगह देने वाले शब्द प्रगतिशील सोच के कथाकार रहे हैं। प्रेमचंद हिंदी साहित्य में भारतीय ग्रामीण जीवन और ग्रामीण नारी को अपनी यथार्थ दृष्टि के साथ साहित्य में स्थान देने वाले पहले कथाकार रहे हैं। "स्वतंत्रोत्तर काल में फणीश्वर नाथ रेणु ने भी प्रेमचंद की इसी परंपरा को आत्मसात करते हुए चले। फणीश्वर नाथ रेणु सारी जिंदगी अपने गांव और अपनी जड़ों से जुड़े रहे और यह जुड़ाव उनकी कहानियों में भी नजर आता रहा है।"[2] प्रेमचंद की कहानियों की तरह ही फणीश्वर नाथ की कहानियों में भी दीन दुखियों और शोषितजनों के लिए गहरी करुणा मिलती रही है। फणीश्वर नाथ की कहानियों में भारत के ग्रामीण अंचल की चेतना का प्रतिनिधित्व मिलता है। ग्रामीण अंचल में जन्मे रेणु समाज में स्त्रियों की इस हीन दशा से परिचित थे। उनके उपन्यास 'मैला आंचल' और परती परिकथा ' की तरह ही उनकी कहानियों में भी स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय स्त्री की सामाजिक और पारिवारिक दशा और उसकी चेतना में आ रहे बदलाव को देखा जा सकता है। उन्होंने ग्रामीण जीवन के साथ-साथ शहरी जीवन को भी आधार बनाकर अपनी कहानियों को लिखा।

'मैला आंचल' उपन्यास में स्त्रियों की दशा अत्यंत दयनीय और सोचनीय दिखाई गई है ,जहां वे शोषण और अन्याय का शिकार हैं, उनकी आकांक्षाओं और इच्छाओं को दबाया जाता है।"[3]

'कमला' स्वतंत्र विचारों वाली नायिका महिला है, जो समाज की बंदिशों के बावजूद अपने आत्म सम्मान के लिए संघर्ष करती है। 'बेला' प्रेम और त्याग की मिसाल है जो अपनी इच्छाओं का बलिदान करती है। 'फुलिया' एक ग्रामीण स्त्री है जो अपने पारंपरिक जीवन में संघर्ष करती है। 'परती परिकथा' में नगीना समाज के बंदिशों को तोड़ने वाली सशक्त महिला है जो अपने प्रेम और अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करती है। 'तीसरी कसम की नायिका हीराबाई एक नृत्यंगना है जो प्रेम और सामाजिक बेड़ियों के बीच संघर्ष करती है। 'पंचलाइट' की ग्रामीण स्त्रियां पुरुषों की तुलना में अधिक व्यावहारिक, आत्मनिर्भर और समझदार दिखाई गई हैं।

रेणु अपने उपन्यासों और कहानियों में बिहार और बंगाल की ग्रामीण पृष्ठभूमि को जीवंत किया। उनकी कहानियों में आंचलिकता और लोक संस्कृति का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है, जो स्त्री जीवन को और भी जीवंत बनाता है। फणीश्वर नाथ रेणु ने कहा है कि " मैं ऑचलिकता नहीं, बल्कि विशिष्टता का पक्षधर हूँ"।

जन जीवन का चित्रण - समाज में उपेक्षित वर्ग, किसानों, मजदूरों और स्त्रियों के सामाजिक संबंध एवं साहचर्य तथा संघर्ष को प्रमुख रूप से रेखांकित किया है।"[4] इस प्रकार उनकी उपन्यासों को पढ़कर यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण नारी की पीड़ा और उसका संघर्ष शहरी नारी से भिन्न है क्योंकि उसे दोहरे शोषण का सामना करना पड़ता है। एक पुरुष सत्ता से और दूसरा समाज की रुढियों से।

"रेणु की नायिकाएं भावनात्मक रूप से सशक्त होती हैं, जो प्रेम, संघर्ष और बलिदान की प्रतीक हैं। उन्होंने स्त्री

जीवन की कठिनाइयों को संवेदनशीलता और यथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत किया है।" औरतें जन्म से ही सहनशील होती हैं, पर जब उनकी सहनशीलता का बाँध टूटता है, तो वे इतिहास रच देती है।"[5]

रेणु के साहित्य में स्त्रियां केवल सहायक पात्र ही नहीं बल्कि समाज परिवर्तन की वाहक भी होती हैं, जो अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के विरुद्ध उठाती हैं और अपनी पहचान के लिए संघर्ष करती हैं। " बेला की ऑखों में ऑसू नहीं, एक चुप विद्रोह था, जो उसे कमजोर नहीं, बल्कि और मजबूत बना रहा था।" यह रेणु की स्त्री चेतना का प्रदर्शित करता है। (मैला ऑचल)

रेणु की नायिकाएं परिस्थितियों से जूझती हैं और आत्मनिर्भर बनने की कोशिश करती हैं। जैसे –रत्ना का त्याग "रेणु की स्त्रियाँ ग्रामीण होते हुए भी आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान का प्रतीक हैं। वे सिर्फ सहनशील नहीं, बल्कि समय आने पर विद्रोह भी बनती है।"[6]

फणीश्वरनाथ के स्त्री पात्र में प्रेम को आत्मसात करने वाली लेकिन समाज की सच्चाइयों से समझौता करने वाली होती हैं। पारंपरिक समाज में स्त्रियों की स्थिति, उनकी समस्याएं और उनका संघर्ष, कोमल भावनाओं का चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों तथा उपन्यासों में स्त्री जीवन को यथार्थ के धरातल पर उतर खड़ा किया है।

जिस तरह सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक संस्थाओं ने स्त्री जीवन को प्रभावित किया है ठीक उसी प्रकार धार्मिक संस्थाओं ने भी स्त्री जीवन को प्रभावित किया। फणीश्वर नाथ रेणु ने स्त्री जीवन की स्थिति को धार्मिक क्षेत्र में भी महसूस किया था। उन्होंने उपन्यासों में धर्म के नाम पर हो रहे स्त्री शोषण का पर्याप्त चित्र प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष : फणीश्वर नाथ रेणु के कथा साहित्य में स्त्री जीवन का चित्रण अत्यंत सजीव, संवेदनशील और यथार्थपरक है। उनकी नायिकाएं केवल पीड़ित पात्र ही नहीं हैं बल्कि वे अपने हक के लिए लड़ने वाली, समाज को आईना दिखाने वाली और स्वतंत्रता की राह पर आगे बढ़ाने वाली स्त्रियां हैं। रेणु के साहित्य में ग्रामीण स्त्री की जिजीविषा ,संघर्ष और प्रेम का गहरा चित्रण मिलता है, जो हिंदी कथा साहित्य को समृद्ध बनाता है। फणीश्वर नाथ रेणु ने कहा कि नारी के हृदय को वास्तविक रूप से पहचाना किसी भी पुरुष के लिए सहज नहीं है। अतः हम कह सकते हैं की स्वतंत्रता के बाद फणीश्वर नाथ रेणु ने दम तोड़ती सामंती और नवीन स्थापित पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्विरोधों के बीच पिसने वाली और नारकीय स्थितियों के मध्य गुजरने वाली आम नारी की जीवन गाथा को अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। और इसके साथ ही परंपरागत संस्कारों और रुढ़िवादिता में जकड़ी हुई नारी की घुटन, कुंठा, विवशता, उत्पीड़न आदि का चित्रण प्रस्तुत करते हुए उसकी मुक्ति के लिए किए गए संघर्षों को भी प्रस्तुत किया गया है। रेणु ने नारी चेतना के लिए मार्ग दिखाया जिससे भारतीय ग्रामीण नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. फणीश्वर नाथ रेणु , ' मैला आंचल 'राजकमल प्रकाशन। पृष्ठ संख्या 112 -113, 178- 190
2. फणीश्वर नाथ रेणु 'परती परिकथा' राजकमल प्रकाशन। पृष्ठ संख्या 85-102, 210-225
3. फणीश्वर नाथ रेणु ' पंचलाइट' और अन्य कहानियां राजकमल प्रकाशन। 22-35
4. हिन्दी साहित्य में आंचलिकता, नामवर सिंह।
5. फणीश्वर नाथ रेणु का कथा संसार, डॉ रामविलास वर्मा।
6. हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, डॉ सुधा सिंह।

•